

Padma Shri



MS. PRAKASH KAUR

Ms. Prakash Kaur is the Managing Trustee of Bhai Ghanayya Ji Charitable Trust (Regd) which runs, Unique Home Jalandhar - a home for the orphan, abandoned and underprivileged children. Trust has honored her as 'Lifetime Managing Trustee' for her role in saving and serving the children who were abandoned and thrown, by providing all facilities to live and to educate them so that they could serve the society.

2. Born on 1st January, 1959, Ms. Prakash Kaur was inspired by the noble work of Bhagat Pooran Singh, seeing him very closely doing the sewa. She used to do sewa in Gurudwara and has made her routine to visit there daily and reading and inciting Paths. She never missed any opportunity to attend night Kirtans (Raen Sbai) and Paths. She joined an orphanage at the age of 18, where she used to prepare breakfast, lunch and dinner for children living there. While serving there, she had to face lot of difficulties as she was not happy with the quality of treatment with the children and she dared to oppose the influential management. She fought for the equal rights, dignity and self respect of the shunned children. In 1993, she started a home for such needy children, today known as Unique Home. In initial days there was no funds, no infrastructure available however, she struggled hard to arrange food, milk, medicines and other necessary goods to raise these children until some generous souls came forward to help her in her noble mission. She has developed and articulated a unique orphanage which cares and treats the children like biological parents do. She has been working hard for ensuring betterment of these children.

3. Despite her old age, Ms. Prakash Kaur is fully devoted to the service of the children and she is mother to 70+ abandoned girls. She's given them a life to look forward to; when their own parents wished their death. Every girl, here at the Unique Home in Jalandhar is getting a shot of good education and a secure future; all thanks to the woman they proudly call their mother. It is her dedication and life-long sacrifices that she has managed to built a Home made in 2¹/₂ Acre land flourished with greenery and flowers all around like an angel's home.

4. Ms. Prakash Kaur always worked behind the curtain as her greatest joy derives from her work in the service of children. She can be found often making meals for daughters she serves, washing clothes of children, cleaning washrooms, combing little girls and feeding the children she rescued or in any evening watching those playing in play way or helping them in their studies. Till date she has rehabilitated 20+ girls who had grown up to the age of marriage, by finding them suitable match and family and as mother she has performed the rituals of their marriages as per trend and custom of Indian society. All the married daughters are well settled and are happy in their respective families. Since 1993, she has dedicated her life to the noble but onerous mission of rescuing unwanted and abandoned newborn girls and giving them secure home and future.

5. Ms. Prakash Kaur is recipient of numerous awards and honors. She has been conferred as CNN-IBN Real Hero Awardee 2011. She received Bhartiya Manavta Vikas Puraskar from The Indian Institute of Planning and Management, New Delhi. In 2012, she was conferred with Award of Honor from The Indian Medical Association, Jalandhar. In 2015 for her pioneer role in the social sector, she received Lifetime Achievement Award 2015 from The Sikh directory at New Delhi. In 2017, S. Harjit Singh Sajjan, Minister of Defence, Canada honored her by certificate of appreciation for her outstanding commitment and services towards the society and the children.



सुश्री प्रकाश कौर

सुश्री प्रकाश कौर भाई घनैया जी चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) की मैनेजिंग ट्रस्टी हैं, जो अनाथ, परित्यक्त और वंचित बच्चों के लिए, यूनिट होम, जालंधर चलाती हैं। ट्रस्ट ने परित्यक्त और लावारिस बच्चों को जीवन जीने और समाज की सेवा करने के लिए सभी शिक्षा सुविधाएं प्रदान करने में उनकी भूमिका के लिए उन्हें 'लाइफटाइम मैनेजिंग ट्रस्टी' के रूप में सम्मानित किया है।

2. 1 जनवरी, 1959 को जन्मी सुश्री प्रकाश कौर, भगत पूरण सिंह के नेक काम से प्रेरित हुईं, क्योंकि उन्होंने उन्हें सेवा करते हुए बहुत गौर से देखा था। वह रोजाना गुरुद्वारे में सेवा करती थी और वहां दर्शन करने तथा पाठ करने और जप करने को अपनी दिनचर्या बना लिया था। वह रात्रि कीर्तन (रैन सबाई) और पाठ करने का कोई मौका नहीं चूकती थीं। 18 वर्ष की आयु में उन्होंने एक अनाथालय में काम करना शुरू कर दिया। वह वहां रहने वाले बच्चों के लिए नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात का खाना तैयार किया करती थीं। वहां सेवा करते समय, उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा क्योंकि वह बच्चों के प्रति किए जा रहे व्यवहार से खुश नहीं थीं और उन्होंने ताकतवर प्रबंधन का विरोध करने की हिम्मत दिखाई। वह परित्यक्त बच्चों के समान अधिकार, गरिमा और स्वाभिमान के लिए लड़ीं। 1993 में उन्होंने ऐसे जरूरतमंद बच्चों के लिए एक घर की स्थापना की, जिसे आज यूनिट होम के नाम से जाना जाता है। शुरुआती दिनों में उनके पास न धन और न कोई बुनियादी ढांचा था, वह इन बच्चों के पालन-पोषण के लिए भोजन, दूध, दवाओं और दूसरी आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करने के लिए बहुत संघर्ष किया करती थीं लेकिन बाद में कुछ भले लोग उनके इस नेक काम में हाथ बंटाने के लिए आगे आए। उन्होंने एक अनूठे अनाथालय का निर्माण किया और उसे आगे बढ़ाया। इस अनाथालय में सगे माता-पिता की तरह बच्चों से लाड़-प्यार और देखभाल की जाती है। वह इन बच्चों का जीवन बेहतर बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं।

3. वृद्धावस्था के बावजूद सुश्री प्रकाश कौर बच्चों की देखभाल के लिए पूरी तरह समर्पित हैं और सत्तर से अधिक परित्यक्त लड़कियों की मां हैं। उन्होंने मां-बाप द्वारा मरने के लिए छोड़ दी गई बच्चियों के जीवन में आशा की किरण जगाई है। जालंधर के यूनिट होम में हर लड़की को उत्तम शिक्षा और सुरक्षित भविष्य मिल रहा है। सभी लड़कियाँ उस महिला के प्रति आभारी हैं जिन्हें वे गर्व से अपनी माँ बुलाती हैं। यह उनका समर्पण और आजीवन त्याग है कि वह ढाई एकड़ जमीन पर एक ऐसे घर का निर्माण करने में कामयाब रही हैं जो हर तरफ हरियाली और फूलों के साथ एक देवस्थान की तरह पल्लवित हो रहा है।

4. सुश्री प्रकाश कौर ने हमेशा पर्दे के पीछे काम किया क्योंकि उन्हें बच्चों के प्रति उनके सेवाकार्य से ही सच्ची खुशी मिलती है। उन्हें अक्सर अपनी इन बेटियों के लिए भोजन बनाते हुए, उनके कपड़े धोते हुए, स्नानगृह साफ करते हुए, छोटी बच्चियों के बाल गुंथते हुए, उन्हें खाना खिलाते हुए और शाम के समय उन्हें खेलते हुए देखते हुए या उनकी पढ़ाई में मदद करते हुए देखा जा सकता है। अब तक उन्होंने 20 से अधिक लड़कियों का पुनर्वास किया है जो शादी की उम्र की हो गई थीं, उनके लिए सही मेल और परिवार खोजकर और मां के रूप में उन्होंने भारतीय समाज के रुझान और रिवाज के अनुसार उनकी शादियों की रस्में निभाई हैं। सभी विवाहित बेटियों का घर अच्छी तरह से बस गया है और वे अपने-अपने परिवार में खुश हैं। 1993 के बाद से, उन्होंने अवांछित और परित्यक्त नवजात लड़कियों को बचाने और उन्हें सुरक्षित घर और भविष्य देने के श्रेष्ठ किंतु चुनौतीपूर्ण कार्य के लिए अपने जीवन को समर्पित किया है।

5. सुश्री प्रकाश कौर कई पुरस्कार और सम्मान की प्राप्तकर्ता हैं। उन्हें सीएनएन-आईबीएन रियल हीरो अवार्ड 2011 के रूप में सम्मानित किया गया है। उन्हें भारतीय योजना एवं प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली से भारतीय मानव विकास पुरस्कार मिला। 2012 में उन्हें इंडियन मेडिकल एसोसिएशन जालंधर की ओर से अवार्ड ऑफ ऑनर से नवाजा गया। सामाजिक क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका के लिए 2015 में, उन्हें नई दिल्ली में सिख डायरेक्टरी से लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार 2015 प्राप्त हुआ। 2017 में, कनाडा के रक्षा मंत्री एस. हरजीत सिंह सज्जन ने समाज और बच्चों के प्रति उनकी उत्कृष्ट प्रतिबद्धता और सेवाओं के लिए प्रशस्ति-पत्र द्वारा उन्हें सम्मानित किया।